VOL- X | ISSUE- VI | JUNE | 2023 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.367 | ISSN 2349-638x

ओमप्रकाश वाल्मीकि के कहानियों में चित्रित नारी विमर्श

विक्रम बालकृष्ण वारंग,
सहायक प्राध्यापक,हिन्दी विभाग,
डी.बी.जे. महाविद्यालय, चिपलून,
जि.रत्नागिरी, महाराष्ट्र ।
ईमेल - warangvikram@gmail.com

२१ वीं सदी में भी भारतीय पुरुष प्रधान संस्कृति में 'नारी' को दुय्यम स्थान ही मिला है । आज आधुनिक युग में समाज की मानसिकता में कोई बदलाव नहीं आया है । कभी पुरुषी अहंकार, कभी परंपरा तो कभी रुढी के नामपर नारी का शोषण हो ही रहा है। इन सब में वह नारी अगर 'दलित' है, तो उसकी यह पीडा और भी अधिक बढ जाती है । आदिवासी नारी, ग्रामीण नारी के समान ही 'दलित नारी' का जीवन भी अनेक यातनाओं समस्याओं से भरा है । दलित साहित्य में दलित नारी की इसी त्रासदी, पीडा को मुखरित करने का प्रयास अनेक दलित रचनाकारों ने किया है । इनमें - ओमप्रकाश वाल्मीकि, मोहनदास नैमिशराय, सुरजपाल चैहान, जयप्रकाश कर्दम, दयानंद बटोही, सुशीला टाकभौरे, कौसल्या बैसंत्री आदि ने दलित साहित्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है ।

२१ वीं सदी में दलित साहित्य में ओमप्रकाश वाल्मीकि एक सर्वश्रेष्ठ रचनाकार माने जाते है । उनके 'सलाम' (सन २०००), 'घुसपैठिए' (सन २००3) इन कहानी संग्रहों में दलित समाज की वेदना, व्यथा,आक्रोश, विवशता, पीडा की अभिव्यक्ति हुई है । इन सभी कहानियों में उपेक्षित और वंचित दलित नारी के जीवन के विविध पक्षों को उजगर किया गया है । उन्होंने दलित जीवन के पीड़ा , छटपटाहट ,जीवन की विवशता को वाणी देने का प्रयास किया है । उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से शोषित जन समूह की विसंगतियों पर प्रहार किया है । ओम प्रकाश वाल्मीकि ने अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक आंदोलनों को साहित्यिक अभिव्यक्ति देने का महत्वपूर्ण काम किया है । इनकी सभी कहानियाँ सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक सन्दर्भो के बीच रची गयी हैं । "वरिष्ठ दलित कथाकार ओमप्रकाश वाल्मीकि एक प्रतिष्टित नाम है । उनकी कहानियों के मूल में अस्पृश्यता से उत्पन्न पीड़ा,अज्ञानता,अंधश्रद्धा,पारिवारिक जीवन के तनाव,द्वंद्व,नई-पुरानी पीढी का संघर्ष,सामाजिक विषमताएँ, आर्थिक समस्याओं और ज्वलंत प्रश्नों पर गंभीर विमर्श प्रस्तुत होता है ।"०१उनकी कुछ प्रमुख कहानियाँ- 'यह अंत नही', ' जंगल की रानी', 'चिडीमार', 'अम्मा', 'खानाबदोश', 'जिनावर', आदि कहानियों में दलित नारी की त्रासदी का चित्रण हुआ है ।

१) यह अंत नही :-

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने 'यह अंत नही' इस कहानी में दलित नारी के अपमान, त्रासदी, यातना, अन्याय को यथार्थता के साथ चित्रित किया है । इस कहानी की नायिका 'बिरमा' एक दलित नारी है । सवर्ण 'सचीन्दर' बिरमा को अकेली जानकर उस पर अत्याचार करने की कोशिश करता है । लेकिन बिरमा उस पर वार करके अपने आप को बचा लेती है । 'बिरमा' का भाई 'किसन' है, जो शहर में उच्च शिक्षा ले रहा है, वह बिरमा को समझाकर पुलिस स्टेशन में रपट लिखवाने के लिए कहता है । तेजभान जैसे ताकतवर आदमी का बेटा सचीन्दर उसके खिलाफ इन्स्पेक्टर भी रपट लिखने को तैयार नही होता, वह कहता है - " छेडखानी हुई .... बलात्कार तो नहीं हुआ .... तुम लोग बात का बतंगड बना रहे हो ।"०२

इस घटना के अपमान से बिरमा में न्याय की इच्छा जागृत होती है, और वह अपने भाई की मदद से प्रधान को अर्जी देती है । एक ओर सवर्णों की दादागीरी, अत्याचार तो दुसरी ओर दलितों में जागा स्वाभिमान, आत्मविश्वास — "ना बिरमा यह अंत नही है, तुमने हमें ताकत दी है । हार को जीत में बदलेंगे ।"०३ लेकिन गाँव के पंचायत सदस्यों के

साथ मिलीभगत होने के कारण सचीन्दर को केवल पाँच रुपए का जुर्मांना करके छोड दिया जाता है । इस कहानी में हम देखते है कि किस प्रकार दलित नारी सवर्णो के अत्याचारों का शिकार होती है । वह आत्मरक्षा,स्वाभिमान के लिए जागृत होती है, परंतु समाज के स्वार्थी तत्वों से उसे न्याय नहीं मिलता ।

२) जंगल की रानी :-

'जंगल की रानी' इस कहानी की नायिका 'कमली' है । कमली गाँव के स्कुल में नौकरी करके अपना जीवन-यापन करती है । एक दिन ग्रामीण महिला प्रशिक्षण शिबिर के कार्यक्रम में आए 'डीप्टी साहब' की वासनाभरी नजर कमली पर पडती है । कमली को प्राप्त करने के लिए साहब बेचैन होते है । वे कमली को अपने वासना का शिकार बनाना चाहते है । परंतु जंगल की रानी कमली के कडे विरोध के सामने वे हार जाते है । अपने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए कमली अंत तक लडती रहती है । वह संघर्ष करते करते अपनी जान तक दे देती है । 'नया सवेरा' का संपादक 'सोमनाथ' मामले के तह तक पहुँचना चाहता है । वह जान जाता है की कमली ने आत्महत्या नही की, बल्कि इन स्वार्थी, अत्याचारी लोगों ने बलात्कार की घटना का सच छिपानें के लिए यह चाल चली है । लेकिन उसे भी अपनी जान गवानी पडती है ।

३) चिडीमार :-

चिडीमार' कहानी भी दलित नारी के जीवन संघर्ष, दृढ आत्मविश्वास को दर्शाती है । इस कहानी की नायिका 'सुनीति है । अपने पिता के रिटायरमेंट के बाद घर की आर्थिक हालत सुधारने के लिए वह नौकरी करती है । समाज में अगर कोई दलित नारी अपने पैरों पर खडा होना चाहती है, तो सवर्ण उसके मार्ग में आडे आते है । मोटरसाइकील लेकर नौकरी पर जाती सुनीति को सवर्ण लोग ताने मारते है । हररोज तीन चिडीमार सुनीति के मार्ग में बाधा डालते है और उससे छेडखानी करते है । वह आत्मरक्षा के लिए उन चिडीमारों का प्रतिकार करती है । दलिततों को अपनी रक्षा खुद करनी पडती है । उनकी मदद करनेवाला कोई भी नहीं है । सुनीति का मित्र सुतेज उससे मदत करने आता है । सुतेज एक चिडीमार को सबक सिखाता है । इस घटना के बाद पुलिस सुनीति को पकडकर मारनेवाले का नाम पुछती है ।

इस तरह इस कहानी में हम दलित नारी की दृढ इच्छा शक्ति, आत्मविश्वास, आत्मबल, संघर्षरत जीवन को देख सकते है ।

४) अम्मा :-

'अम्मा' कहानी की प्रमुख पात्र 'अम्मा' दलित होते हुए भी अपनी अस्मिता, स्वाभिमान के प्रति तथा स्त्रीत्व की रक्षा के प्रति जागृत है । अम्मा 'भंगी' जाति की औरत है । वह सवर्ण लोगों के घरों में पाखाना साफ करने का काम करती है । इस काम से वह अपने बच्चों को दूर रखती है । अम्मा सफाई कर्मी नारियों का प्रतिनिधिक पात्र है । दिन-रात मेहनत करनेवाली अम्मा अशिक्षा के कारण अंधकार में डूबी हुई दिखाई देती है । अम्मा के सच्चरित्रता के दर्शन तब होते है, जब वह मिसेज चोपडा का आशिक विनोद अम्मा से छेडछाड करता है, तब अम्मा उसकी झाडु से पिटाई करती है । अम्मा मिसेज चोपडा से कहती है — " भैण जी इस हरामी के पिल्ले से कह देणा, हर एक औरत छिनाल ना होवे ।"०४

अम्मा जैसी दलित नारियाँ अपने आत्मसम्मान तथा स्त्रीत्व की रक्षा के हेतु कितनी जागृत है, यहाँ पर देखा जा सकता है ।

५) खानाबदोश :-

इस कहानी में दलित नारी के दो अलग-अलग पहलुओं को चित्रित किया गया है । कहानी में 'किसनी-महेश', 'सुकिया-मानो' ये चार पात्र भट्ट मजदूर है । महेश और किसनी की नई-नई शादी हुई थी । एक दिन सूबेसिंह की वासनाभरी नजर किसनी पर पडती है । सूबेसिंह उसे प्राप्त करने के लिए उसको दफ्तर की सेवा-टहल करने का काम सौंप देता है । यहाँ से किसनी का शारीरिक शोषण शुरु होता है । आर्थिक प्रलोभन दिखाकर किसनी का शोषण शुरु रहता है। मजबुरीवश किसनी इस परिस्थिति को स्वीकार करती है ।

कहानी की दूसरी नारी पात्र 'सुकिया' को जब सूबेसिंह दफ्तर में बुलाता है, तब वह साफ-साफ इन्कार कर देती है । वह किसनी जैसी नहीं बनना चाहती थी । एक स्वाभिमानी स्त्री का परिचय यहाँ हमे होता है । सुकिया एक इज्जतभरी सम्मान की जिंदगी जीना चाहती थी । सूबेसिंह उसे हर प्रकार की कोशिश कर उसे परेशान करता है । उसकी आमदनी भी रोकता है । अंत में सुकिया और मानो अपने घर

के सपने को बिखरता देखकर एक दिशाहिन यात्रा पर चल पडते है ।

६) जिनावर :-

जिनावर कहानी में मामाजी अपनी बहु को ही चौधरी के हाथों पाँच हजार रुपए में बेच देते है । चौधरी के बेटे बिरजू के साथ उसकी नाम मात्र शादी हुई थी । इस शादी के आड में चौधरी बहु का शारीरिक शोषण करता है । जब बहु इसके लिए तैयार नहीं होती, तो उसे घर से बाहर निकाल दिया जाता है । बहु अपने पति बिरजू से इस घटना की शिकायत करती है, तो वह उसे गालियाँ देता है । अपने पिताजी के विरुध्द एक शब्द भी वह सुन नहीं सकता । साँस भी बहु की मदद नहीं करती । वह कहती है- "इस घर का तो यह रिवाज ही है । औरत सिर्फ इस्तेमाल की चीज है । इस घर में रिश्तों की मर्यादा का मतलब ना है बहु । जिंदगी सुख चैन से काटनी है तो समझौता कर ले ।"०५

इस प्रकार ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने अपनी 'यह अंतर नही', 'जंगल की रानी', 'चिडीमार', 'अम्मा', 'खानाबदोश', 'जिनावर' आदि कहानियों के माध्यम से दलित नारी की विवशता, पीडा, यातना, त्रासदी को वास्तविकता के साथ चित्रित किया है ।

संदर्भ ग्रंथ -

१) दलित साहित्य : विविध आयाम - डॉ.सुनीता साखरे,पृ.सं.५८
२) यह अंत नही,(घुसपैठिए) - ओमप्रकाश वाल्मीकि,पृ.सं. २४
३) यह अंत नही,(घुसपैठिए) - ओमप्रकाश वाल्मीकि,पृ.सं. २९
४) अम्मा (सलाम) - ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ.सं.११६
५) जिनावर (सलाम)- ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ.सं.९९

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com